Vol. 1, Issue II / March 2011, pp. 10-13

Research Paper - Hindi

'सरोज-स्मृति' का औदात्त्य

डॉ. अशोक बाचुळकर
आजरा महाविद्यालय, आजरा

छायावादी कवियों में निराला का विशेष स्थान है। छायावाद की ही तरह हिंदी प्रगतिवादी काव्यधारा में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका काव्य विविधोन्मुखी भावधाराओं से संपृक्त है। आष्ट्रप्रेम, प्रकृतिप्रेम, प्रेम का उदात्त स्वर, करुणा आदि भाव उनके काव्य में पाए जाते हैं। युगांतकारी कवि निराला हिंदी में मुक्तछंद के भी प्रणेता रहे है। छंद, भाषा, शैली, भाव आदिबाबत उन्होंने काव्य कोनवीन दिशा देने का कार्य किया है।

निराला की अनेक श्रेष्ठ रचनाओं में 'सरोज- स्मृति' का अून्य साधारण महत्व है। यह हिंदी का सर्वश्रेष्ठ शोकगीत है। यह शोकगीत कवि ने अपनी पुत्री सरोज के देहांत के बाद लिखा है। सव्वा साल में ही सरोज का मातृ वियोग सहना पडा। बाल्यावस्था सेही जीवन के अनेक थपेडेउसेखानेपडे।विवाह पश्चात् कुछ महिनेबाद भयानक बीमारी के परिणाम स्वरुप उसका देहांत होगया। गरीबी के कारण कविवर अपनी पुत्री का इलाज नहीं कर पाए। जीवन में मिला केवल दुख उसके पास सिवा इसके कुछ नहीं बचा इसीलिए तो वह कहता है।

''दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कहीं।''(अपरा पृ.१५६)

यह दुख मात्र एक-दो वर्ष का नही है, बल्कि १९ वर्षों का दुख है। 'सरोज-स्मृति' कवि की दुख गाथा है, भले ही यह पुत्री के देहांत के बाद लिखी गई हो।दूसरी बात यह भी है कि बहुतेरे हिंदी रचनाकारों की यही स्थिती रही है।'सरोज-स्मृति'उदात्त गुणोंसे परिपूर्ण रचना है। पाश्चात्य विचारक लोंजाइनस ने औदात्यपूर्ण रचना के निम्न तत्त्व प्रतिपादित किए हैं, जिनके आधार पर हम 'सरोज-स्मृति' का विवेचन करेंगे।

१. महान विचारों की उद्भावना:

लोंजाइनस की दृष्टि में कृति को महानत प्रदान करा देनेवाले तत्त्वों मेविचारों का सर्वोपरि स्थान है। विचारों की महानता रचनाकार के दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। रचनाकार का दृष्टिकोण उदार हो तो विचार भी महान होते है। तात्पर्य अमर एवं कालजयी रचना के लिए रचनाकार का प्रतिभावान होना आवश्यक है।

कवि निराला की अनेक रचनाएँ स्तुत य एवं कालजयी हैं। इसका प्रमुख कारण है -उनका दृष्टिकोण तथा उनका क्रांतीकारी व्यक्तित्व। अपनेपास जो भी है, वह दूसरों में बाँटने का उनका स्वभाव । सभी के प्रति उदार भाव। इसी दृष्टिकोण का परिणाम है कि उनकी रचनाएँ पाठकों पर अमिट छाप छोड चुकी है। 'सरोज-स्मृति' उनके व्यक्तिगत जीवन से संबंधित होनेके बावजूद सार्वजनीन बन गई है। निराला का संपूर्ण जीवन संघर्षोका बीच गुजर गया। जन्म के तीन वर्ष बाद माँ का स्वर्गवास, सत्रह वर्ष बाद पिता का चल बसना, एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म देकर पत्नी का बिदा लेना। पुत्री सरोज की असमय मृत्यू, ऊपर से अर्थाभाव। क्या सहन नही किया इस कनि ने? इसीलिए तो वह कहता है -'दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज, जो नहीं कहीं'।

कवि ने संघर्ष को जीवन का अनिवार्य तत्त्व माना है, जिसका उन्होंने स्वत: अपने जीवन में अनुभव किया है। ''सरोज-स्मृति ' में हम उसके जीवन संघर्ष का चित्र देखते हैं। चारों ओर से प्रहार होने पर कवि भविष्य में अपना विश्वास दृढ रखे हुए उनका सामना करता हैं।''(रामविलास शर्मा, निराला,पृ.१५६) फिर भी कवि ने हार नहीं मानी। संपादकों का पास भेजी रचनाएँ वापस आनेपर भी कवि लिखना नहीं छोडता।

''... मैं इसी तरह समस्त
कवि जीवन में व्यर्थ भी व्यस्त;
लिखता अबाध गति मुक्त छंद
पर संपादकगण निरानंद
वापस कर देते पढ सत्वर
दे एक-पंक्ति-दो में उत्तर।''(अपरा, पृ. १४८)

कवि कहना चाहता है कि हमें निराश नहीं होना चाहिए । यही भाव कवि ने अपनी 'राम की शक्तिपूजा' में भी व्यक्त किए हैं। पूजा की अंतिम घडी में कमल हाथ न लगनेपर राम विचलित होते हैं, लेकिन क्षणभर ही । अगलेपल वे अपनी आँख अर्पित करने हेतु वे

ब्रह्मशर हाथ में उठा लेते हैं। निराला का जीवन राम से अलग कहाँ हैं। संपादकों द्वारा रचनाएँ वापस की जानेके बावजूद निराला सृजनरत रहे। बेजोड ऐसी रचनाएँ हिंदी साहित्य को देदी। जो हिंदी की ही नही, अपितु विश्वसाहित्य की अमूल्या निधी हैं। मुक्तछंद के प्रणेता भी वही रहें।

निराला भाग्य में विश्वास करनेवाले जीव नहीं थे। निकटवर्तियों ने आग्रह किया कि कुंडली में दूसरा विवाह हैं, वेविवाह करें। निराला ने क्या किया ?

''कुंडली दिखा बोला-''ए-लो''
आई तू , दिया, कहा-''खेलो।''
कर स्नान-शेष,उन्मुक्त -केश
सासुजी रहस्य-स्मित सुवेश
आई करनेकी बातचीत
जोकल होनेवाली, अजीत;
संकेत किया मैंने अखिन्न
जिस ओर कुंडली छिन्न-भिन्न,
देखनेलगी वे विस्मय भर
तू बैठी संचित टुकडों पर।''(अपरा,पृ.१५१)

ऐसा निराला ही कर सक्ते हैं। परंपराओं एवं आडंबरों का उन्होंने सदैव विरोध किया है। पुत्री सरोज की शादी में दहेज देना उन्हें स्वीकार नहीं था। बारात बुलाकर धन उडाना उनकी दृष्टि में मिथ्या व्यय था। सरोज की शादी में मंत्र पठन तक वे खुद करते हैं-

''..... पर नहीं चाह,
मेरी ऐसी, दहेज देकर
मैं मुर्ख बनूँ, यह नहीं सुघर,
बारात बुलाकर मिथ्या व्यय
मैं करुँ, नहीं ऐस सुसमय।
तुम करो ब्याह, तोडता नियम
मैं सामाजिक योग के प्रथम
लग्न के पढूँगा स्वयं मंत्र;
यदि पंडितजी होंगे स्वतंत्र।''(अपरा,पृ.१५४-१५५)

इन्ही क्रांतीकारी विचारों के कारण 'सरोज-स्मृति'अमर रचना बन गई है।

२. उत्तेजित तीव्र आवेग:

काव्य को भव्यता प्राप्त होती है, प्रेरणा प्रसूत आवेंगों के कारण। इनके यथास्थान व्यक्त होने से रचना में औदात्त्य की सृष्टि होती हैं। लोंजाइनस ने आवेंग के दो भेद बताए हैं - (१) भव्य और (२) निम्न।''भव्य आवेग मनुष्य के अंतकरण में क्रियाशील होते हैं, तब उसकी आत्मा मलिन होती है और नीचता जाग्रता होती है। लोंजाइनस के मन से उत्साह का आवेग औदात्त्य तत्त्व को प्रेरित करता है।''(भगीरथ मिश्र, पाश्यात्य काव्यशास्त्र,पृ.१६९)

भव्य आवेगों के अंतर्गत शृंगार,शौर्य , ओज, हास्य आदि आते हैं तो निम्न आवेगों के अंतर्गत दया, शोक, भय आदि।

'सरोज- स्मृति'एक श्रेष्ठ शोकगीत है। बावजूद इसमें भव्य आवेगों का चित्रण है। पुत्री सरोज के देहांत की खबर मिलनेके दोदिन बाद कवि ने इसकी रचना की है। इसमें सरोज केन होनेका दुख इतना तीव्र नहीं जितनी कि कवि की संघर्ष गाथा। इसमें जोआवेग हैं, वे प्रेरणाप्रसूत जान पडते हैं, बलात नही । अपनी कुंडली पुत्री कोखिलानेके रुप में निराला देदेते हैं। नियति को चुनौती देते हैं कवि, जहाँ वीर रस का चित्रण है। कवि आँख मूँदकर परंपरा का अनुकरण नहीं कर सकता है। इसीलिए तो वह कहता है-

''.... मेरे पूर्वजगण
गुजरेजिस राह, वही शोभन
होगा मुझको, यह लोक-रीति
कर दूँ पूरी, गो नही भीति।''(अपरा,पृ.१५३)

नीडरतापूर्वक कवि परंपरागत बंधनों कोतोडता है। दहेज का विरोध करना, पुत्री के विवाह में खुद ही मंत्र पढना आदि प्रसंगों में वीर भाव है।

सरोज की सुंदरता का चित्रण करते हुए कवि लिखते हैं-

''धीरे-धीरेफिर बढा चरण,
बाल्य की केलियों का प्रांगण
कर पार कुंज तारुण्य सुघर
आई, लावण्य भार थर-थर काँपा कोमलता का पर सस्वर
ज्यों मालकौश नव वीणा पर;
नैश स्वप्न ज्यों तू मंद-मंद
फूटी उषा -जागरण -छंद।''(अपरा, पृ.१५१)

इस प्रसंग में रति नामक आवेग की सृष्टि हुई है।

निराला की कई रचनाएँ हास्य -व्यंग के लिए प्रसिध्द हैं, 'कुकुरमुत्ता','दान' आदि ।'सरोज -स्मृति' एलीजी है, फिर भी इसमें हास्य-व्यंग की सृष्टि हुई है। यह कवि की मर्मभेदी दृष्टि का परिचायक है।

''वेजोयमुना के - सेकछार
पद फटे बिवाई के उधार
खाए के मुख ज्यों, पिए तेल
चमरौधेजूतेसेसकेल।''(अपरा,पृ.१५३)

स्पष्ट है कि'''सरोज -स्मृति' में करुणा की पृष्ठभूमि पर शृंगार, वास्सल्य, हास्य,व्यंग इ. अनेक भावों का काव्यात्मक संगुफन किया गया है। नाटकीय गुणोंसेओत- प्रोत होने के कारण वह और भी प्रभावपूर्ण हो उठी है।''()सं.धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश, पृ.६५२)

३. समुचित अलंकार योजना:

अलंकार काव्य-सौंदर्य की वृध्दि का एक महत्वपूर्ण साधन है। जब कि लोंजाइनस के समय बहुतेरे कवि अलंकारों को साध्य मान रहेथे। तब लोंजाइनस ने अलंकारों को साधन रुप में अपनाने की क्रांतीकारी बात कही। चमत्कार उत्पन्न करने के लिए अलंकारों का प्रयोग सर्वथा हेय है। अलंकारों की सहजता का समर्थन करते हुए उसने लिखा है, ''अलंकार सर्वाधिक प्रभावशाली तब होता है, जब इस पर ध्यान ही न जाए कि वह अलंकार है।'' (निर्मला जैन, उदात्त के विषय में , पृ.११०)

'सरोज-स्मृति' के अध्ययन से एक बात स्पष्ट होती है कि निराला ने चमत्कार प्रदर्शन के लिए अलंकारों का प्रयोग नहीं किया है। अनुप्रास , उपमा, रुपक जैसे अलंकारों का प्रयोग उन्होंने सहज रुप में किया है; अतिशयोक्ति कहीं भी नहीं। प्रसंगों को भव्य एवं उदात्त बनानेके लिए निराला ने प्रश्नालंकार का प्रयेाग किया है, जैसे-

''तू गई स्वर्ग, क्या यह विचार-
जब पिता करेंगे मार्ग पर
यह, अक्षम अति, तब मैं सक्षम,
ताराँगी कर गह दुस्तर तम? ''(अपरा, पृ.१४५)

प्रश्नालंकार के सार्थक प्रयोग के परिणामस्वरुप प्रसंग पूर्वनियोजित प्रतीत न होकर स्थितीप्रसूत जान पडता है।

पूर्वदीप्तिप्रणाली द्वारा कवि नेसरोज के शैशवकाला का चित्रण किया है, जैसे-

''तू सवा साल की जब कोमल;
पहचान रही ज्ञान में चपल
माँ का मुख, हो चुंबित क्षण-क्षण ,
भरती जीवन में नव जीवन,
.....
सब किए वहीं कौतुक-विनोद
इस घर निशि-वासर भरेमोद;
खाई भाई की मार, विकल
रोई उत्पल-दल-दृग-छलछल,
चुमकारा फिर उसनेनिहार,
फिर गंगा-तट-सैकत -विहार
करनेकोलेकर हाथ, चपला;
आँसुओं धुला मुख हासोच्छल,
लखती प्रसार वह ऊर्मि-धवल।''(अपरा,पृ.१४८)

इस प्रसंग में प्रत्यक्षीकरण और विस्तारण दोनों अलंकारों का प्रयोग निराला नेबखूबी से किया है। संपूर्ण प्रसंग हमारेसामने साक्षात् हो उठा है। इन अलंकारों के कारण 'सरोज-स्मृति'एक विराट एवं प्रभावी रचना बन गई है।

४. भव्य शब्दावली एवं पदरचना:

लोंजाइनस की मान्यता है कि विचार और पद अन्योन्याश्रित हैं। ''सुंदर शब्द ही वास्तव में विचार कोएक विशेष प्रकार का आलोक प्रदान करते हैं। '' (डॉ. नगेंद्र, काव्य में उदात्त तत्व, पृ.१८)अर्थात् विचारों को भव्य तथा प्रभावपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त करनेवाली शब्दावली एवं पदरचना की वह समर्थन करता है।

निराला कुशल भाषाशिल्पी थे। उन्होंने प्रसंगानुरुप शब्दावली का प्रयोग किया है। कम से कम शब्दोंद्वारा उन्होंनेअपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया है। परिणामत: उसमें एक गूढ सांकेतिकता है। तत्सम शब्दों की अधिकता है। दृष्टव्य है ये पंक्तियाँ-

''त नये, ली कर दृक्पात तरुण
जनक से जन्म की विदा अरुण।
गीतेमेरी , तज रुप नाम
वर लिया अमर शाश्वत विराम
पूरे कर शुचितर सपर्याय
जीवन के अष्टादशाध्याय,
चढ मृत्यू-तरणि पर तूर्ण-चरण
कह-'' पित:, पूर्ण आलोक वरण
करती हूँ मैं, यह नहीं मरण;
सरोज का ज्योति:शरण-तरण''(अपरा,पृ.१४५)

प्रस्तुत पंक्तियों में ध्वन्यात्मकता एवं नाद सौंदर्य भी है। परिणामस्वरुप भाषा सजीव हो उठी है। भावों के वहन में निराला की भाषा सक्षम है। भव्य शब्दावली एवं पद रचना के कारण 'सरोज-स्मृति' की बहुत-सी पंक्तियाँ चिरस्मरणीय हो गई है।

५. गरिमामय रचना विधान:

गरिमामय रचना विधान से लोंजाइनस का तात्पर्य है- सामंजस्य, समन्वय एवं औचित्य। यह रचना का प्राणतत्व है, जिसके अंतर्गत काव्य रचना संबंधी अनेक तत्व आते हैं, जैसे- विचार, कार्य, शब्द, राग आदि। रचनाकार की कला और प्रतिभा कोइसी से समझा जा सकता है।

पक्ले ही हम कह चुके हैं कि'सरोज-स्मृति' मात्र निराला की संघर्ष गाथा नहीं, बल्कि यह हिंदी के अधिकतर कवियों की संघर्ष गाथा है। इसीलिए तो यह सार्वजनीन है। हम देखते हैंकि किसी की व्यथा कोई भी सुनना नहीं चाहता है, न मनुष्य के पास इतना समय ही है। जबकि 'सरोज-स्मृति' मात्र सभी पढते हैं, बार-बार पढते है। कारण यह एक ओजपूर्ण एवं उदात्त रचना है। यह मात्र निराला से संबंधित नहीं, बल्कि प्रत्येक भारतीय से संबंधित है।

निराला ने अपनी समस्त पीडा इसमें अभिव्यक्त की है। पुत्री का देहांत मात एक निमित्त है। वर्षोसे दबा पडा आक्रोश, वेदना एवं पीडा उसके देहांत के पश्चात फूट पडी है।

''ले चला साथ मैं तुझे, कनक
ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण-झनकअपने
जीवन की, प्रभा विमल
ले आया निज गृह-छाया-त ल।''(अपरा,पृ.१५३)

यह निराला नहीं, बल्कि बाप बोल रहा है।

सरोज के बचपन सेलेकर मृत्यू तक की घटनाओं कोकवि ने इसमें ब्यौरेवार दिया है। उसकी स्मृतियों को स्मरणीय बना दिया है। साथ ही अपने जीवनक्रम को भी अभिव्यक्त किया है। आत्माभिव्यक्ति ही इस कविता की महती विशेषता है। इसके बहाने निराला का ही संपूर्ण जीवन चलचित्र की भाँति हमारे समक्ष उपस्थित होता है।

निष्क़र्ष:

निष्कर्शत: कहा जा सकता है कि 'सरोज-स्मृति' में निराला के क्रांतिकारी व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं, वही एक पिता के कोमल हृदय का भी परिचय मिलता है। त ात्पर्य दो परस्पर विरोधी तत्वों के बीच ऐसा अद्‌भुत एवं अपूर्व सामंजस्य निराला के ही बस की बात है। शोकगीत के बावजूद उदात्त गुणोंसे परिपूर्ण यह रचना विश्वसाहित्य की अमूल्य धरोहर है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. (सं.) धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल प्रकाशन, वाराणसी-१९८६
२. जनराला, अपरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, छात्र संस्करण-१९८६
३. डॉ. निर्मला जैन,उदात्त के विषय में,वाणी प्रकाशन, नर्ल दिल्ली, संस्करण-२००४
४. डॉ.नगेंद्र ,काव्य में उदात्त तत्त्व, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, संस्करण-१९७६
५. भगीरथ मिश्र,पाश्यात्य काव्यशास्त्र, विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण-२००५
६. आमविलास शर्मा, निराला, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण-१९९६